भाषा | साहित्य | संस्कृति

प्रश्नकाल

मैं जंगल घूमना चाहती हूँ
कुछ पल जंगल में
रहना चाहती हूँ

मैंने सुना है
जानवर बेवजह आक्रमण नहीं करते
पेट भर ही खाते
और कई नियमों का पालन भी करते हैं...

~ सारिका भूषण

वर्ष:02, अंक:18,सितम्बर 2025

9 789334 426717

आवरण- बंशीलाल परमार

संपादक : आलोक रंजन

भाषा | साहित्य | संस्कृति

प्रश्नचिह्न

सितम्बर 2025 । अठारहवां अंक

प्रबंध सम्पादकः
राहुल राज

प्रबंध सहयोगः
सौरव कुमार भारती

सम्पादक
आलोक रंजन

आवरणः बंशीलाल परमार
रेखांकनः श्वेता कुमारी

अक्षर संयोजन
खुशी

प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं का सर्वाधिकार रचनाकारों के अधीन सुरक्षित है। प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार, तथ्य लेखकों के अपने हैं। प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं के लिए प्रश्नचिह्न पत्रिका समूह का सहमत होना आवश्यक नहीं है और न ही पत्रिका इसके लिए उत्तरदायी है।

वार्षिक मूल्य :

व्यक्तियों के लिए-	600.00 रुपये
संस्थाओं और पुस्तकालयों के लिए-	1500.00 रुपये
विदेशों में-	$25

एक प्रति का मूल्य :

व्यक्तियों के लिए-	50.00 रुपये
संस्थाओं के लिए-	100.00 रुपये
विदेशों में-	$10

विज्ञापन दरें :

बाहरी कवर-	20,000.00 रुपये
अन्दर कवर-	15,000.00 रुपये
अन्दर पूरा पृष्ठ-	10,000.00 रुपये
अन्दर का आधा पृष्ठ-	7,000.00 रुपये

संपादकीय कार्यालयः

8/54 - ए, प्रथम तल, डबल स्टोरी,
विजय नगर, दिल्ली - 110009
मोबाइल : 9155113056

ई-मेल: prashanchinha.patrika@gmail.com
infoprashanchinha.patrika@gmail.com

वेबसाईट: https://prashanchinhapatrika.blogspot.com

फेसबुक: https://www.facebook.com/prasnacihnapatrika

इंस्टाग्राम: https://www.instagram.com/prashanchinha.patrika

अनुक्रम

सम्पादकीय

कविताएँ

शहंशाह आलम, कुमार विश्वबंधु, सारिका भूषण

अनिल किशोर सहाय, शैलेश कुमार

कहानियाँ

मनीष कुमार सिंह

प्रदीप कुमार राय

आलेख

डॉ. मजीद शेख

संतोष बंसल

समीक्षा

मधुर कुलश्रेष्ठ

अंजली रावत

विविध

समाचार - साहित्य अकादमी

रिपोर्ट - राही रैंकिंग

वास्तविकता पर आभासी पर्दा

संपादकीय

नवोदय विद्यालय के अरावली हॉस्टल के बेड नम्बर छह पर बैठकर सोच रहा हूँ कि काश मुझे यहाँ एक जियो वाला मोबाइल मिल जाता जिसमें इंटरनेट चलता... मैं दुनिया के सारे लोगों से बात कर पाता, अपने देश के बड़े-बड़े लोगों से संपर्क रखता और उनका नंबर लेकर बात करता, पता नहीं क्या क्या... लेकिन आज मेरे पास कुल तीन-चार सिस्टम और भारत का सबसे फास्ट नेटवर्क होने के बावजूद मैंने जो सोचा था वह नहीं कर पा रहा हूँ... ऑनलाइन और ऑफलाइन में एक बहुत बड़ा अंतर है। अगर आपके सामने कोई भी बड़ा व्यक्ति है, अगर आप उसे नमस्ते बोलते हो तो वह भी आपको नमस्ते बोलता है, इग्नोर नहीं करता... लेकिन ऑनलाइन में लोग इग्नोर करते हैं... अगर मैं हाय भेजूँ तो हेलो नहीं आता। यह "इग्नोर" का अनुभव केवल तकनीकी असमर्थता नहीं, बल्कि परस्पर संबंधों की गुणवत्ता में आई गिरावट का संकेत है। फिर आज बहुत से हमारे जैसे लोगों का प्रयास जारी है; वे लोग रोज़ मेल करते हैं, लिंक्डइन पर मैसेज करते हैं...

आज की दुनिया में सब कुछ होने के बाद भी प्रेम की तलाश है... हर कोई प्रेम की तलाश में रहता है... लोगों में इतनी प्रेम की कमी हो गई है क्या? हर जगह नफ़रत और धोखा है कि लोग हर जगह बेहतर खोजने का प्रयास करते हैं...अगर अभी मैं एक फेसबुक का फेक आईडी बनाता हूँ तो 2 से 3 घंटे के अंदर 500 लोगों की रिक्वेस्ट आ जाती है। एक नकली फेसबुक आईडी से कुछ घंटों में सैकड़ों फ्रेंड रिक्वेस्ट आना। यह सिर्फ संख्या नहीं, यह यह बताता है कि कितनी सरलीकृत और सतही हो चुकी है हमारी पहचान। ट्रेंड, फ़िल्टर, और क्यूरेटेड तस्वीरों के दौर ने असल चेहरे और असली भावनाओं के बीच परदा पलट दिया है। प्यार की तलाश, मन की तड़प ये वे भाव हैं जो तकनीक के बावजूद नहीं बदले। पर जिस तरह लोग ऑनलाइन झूठी प्रेज़ेंस से पलायन कर रहे हैं, ठीक उसी तरह असली प्यार और भरोसा भी छिन्न-भिन्न होते जा रहे हैं। प्रेम की कमी नहीं हुई; पर उससे जुड़ी संवेदना, वक्त और परस्पर उपस्थिति की कीमत घट चुकी है। लोग बेहतर की खोज करते-करते अपने पास की सादगी और मानवीय गरिमा खो बैठते हैं।